नवभारत में नवाचार

उन्नत पंडित

यह रचनात्मकता तथा नवाचार को सच्चे अर्थों में मजबूत करने के 'क्रिएटिव इंडिया-इनोवेटिव इंडिया' के सपने को पूरा करने वाली लंबी यात्रा की शुरुआत भर है और इस प्रकार उद्यमिता को बढ़ावा देती है तथा सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास को बल प्रदान करती है। भावी भारत के छात्र देश को प्रत्येक भारतीय के लिए महानता एवं गौरव वाला बनाएंगे, देश भर में विकास करेंगे, आमूल- चूल संरचनात्मक सुधार लाएंगे ताकि नवाचारों के जरिये कायाकल्प को प्रोत्साहित करते हुए अभूतपूर्व पहलों के माध्यम से सतत विकास प्राप्त किया जा सके

भारत 2022 में अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है, ऐसे में उसे नई ऊर्जा देने के साथ परिवर्तन लाने और उसका नव निर्माण करने का समय आ गया है। *नया भारत*, जो प्रेरणा देगा, प्रोत्साहित करेगा, प्रशासन को बदलकर रख देगा, सरकार के साथ साझेदारी के लिए शक्ति प्रदान करेगा और देश के समावेशी विकास पर जोर देगा। प्रधानमंत्री के अनुसार *प्रत्येक नागरिक देश की विकास यात्रा में कुछ न कुछ योगदान कर सकता है।* नया भारत, जो एक साथ आने और देश की सेवा करने का अवसर प्रदान करता है। नए भारत के निर्माण के लिए पहल में वास्तविक स्वतंत्रता, एकता तथा उत्कृष्टता प्राप्त करने का अविश्वसनीय अवसर।

नीति आयोग द्वारा उठाया गया सबसे पहला कदम, जहां सरकार के शीर्ष अधिकारियों ने इसे हकीकत में बदला है, *चैंपियंस ऑफ चेंज* था, जिसमें विभिन्न उद्योगों के उद्यमियों को सरकार के साथ सीधे संवाद का और अपने सपनों के नए भारत के बारे में अपना दृष्टिकोण साझा करने का अवसर प्रदान करने का प्रयास किया गया। सरकार की निर्णय करने वाली शीर्ष टीम ने प्रस्तुतियां सुनी हैं और उनमें दिए गए बिंदुओं से जाहिर हुआ है कि ये सुधार की प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं/चुनौतियों के हरेक आयाम निश्चित रूप से प्रभावी प्रशासन एवं उनके नीति निर्माण में लाभकारी होंगे। यह पहल युवाओं की उत्सुकता, रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को बढ़ाकर ऐसे और भी रचनात्मक एवं अनूठे प्रौद्योगिकी प्लेटफॉर्मों की रचना तथा व्यवस्थागत सुधारों में मदद करने के लिए है ताकि युवाओं के सपनों का नया भारत बनाया जा सके।

प्रशासन के तरीके में बदलाव

प्रशासन को प्रभावी बनाने हेतु सरकार ने सामने दिखने वाले सुधार किए हैं, जैसे 1200 ऐसे कानून खत्म करना, जो निष्प्रभावी थे, लेकिन प्रचलन में थे (प्रधानमंत्री जनधन योजना के जरिये समाज के अंतिम व्यक्ति तक बैंकिंग एवं वित्तीय क्षेत्र की पहुंच बढ़ाना, प्रशासन के लिए कठिन प्रक्रियाएं समाप्त करना और उसे स्पष्ट तथा पारदर्शी बनाना) सरकारी ई-मार्केट प्लेस (जनधन, आधार, मोबाइल) के जरिये साझेदारी करने और कारोबार करने का मौका मुहैया कराना। प्रभावशाली प्रशासन ने सभी राज्यों में वृद्धि तथा सकारात्मकता देने वाली ऊर्जा भर दी है। राज्यों को समाज की सेवा के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिली है। लैंगिक समानता, कृषि विकास, जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, गतिशीलता, संचार, वित्तीय क्षेत्र में डिजिटल कायाकल्प तथा कई अन्य शानदार कदम नए भारत का मार्ग प्रशस्त करने जा रहे हैं।

भारत का लक्ष्य *दस लाख बच्चों और युवाओं को कल का नवाचारी* बनाने का है। नवोन्मेष विकास की ओर उसी प्रकार ले जाता है, जैसे महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान किया था। उन्होंने राष्ट्र की सेवा में लगे प्रत्येक व्यक्ति को विशेष होने का अनुभव कराया था। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को जनांदोलन में बदल दिया था। उसी प्रकार हमें भारत के विकास को जनांदोलन बनाने की जरूरत है। जब हम साथ मिलकर काम करेंगे तो सामने आई प्रत्येक समस्या को हल

लेखक बौद्धिक संपदा एवं नवाचार पेशेवर हैं। औषधीय रसायन विज्ञान में शोध पूरा करने के साथ ही वह बौद्धिक संपदा (आईपी) एवं नवाचार में रुचि रखते हैं। उन्होंने आईपी में विशेषज्ञता के साथ एलएलबी भी किया है और आईआईएम लखनऊ से कार्यकारी प्रबंधन कार्यक्रम भी किया है। अनुसंधान, आईपी और नवाचार में उनका 15 वर्ष का व्यावसायिक अनुभव है। फिलहाल वह नीति आयोग के *अटल नवाचार मिशन* के साथ काम कर रहे हैं। ईमेल: pandit.unnat@nic.in

कर सकते हैं। नए भारत के निर्माण की समस्याओं का समाधान करने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करना एक समाज के रूप में हमारी जिम्मेदारी है। अटल नवाचार मिशन, राष्ट्रीय आईपीआर नीति, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, नीति आयोग द्वारा आयोजित चैंपियंस ऑफ चेंज और डिजिटल अर्थव्यवस्था जैसे सरकार के प्रमुख कदम विकास को ऊर्जा देने जा रहे हैं।

अटल नवाचार मिशन (एम)

इस मिशन की स्थापना शिक्षा व्यवस्था में नवाचार, उद्यमिता और परिवर्तन के जरिये देश की वृद्धि तेज करने के लिए की गई है। 'बच्चों को सिखाया जाना चाहिए कि कैसे सोचना है और अब क्या सोचना है।' किंतु हम उन्हें यह सिखाते रहते हैं कि 'सतर्क रहो। बाहर मत जाओ। बात मत करो। वहां मत चढ़ो। गंदे मत रहो। यह मत करो, वह मत करो। और यह सूची बढ़ती जाती है...'

हम मानते हैं कि ये निर्देश हमारे अनुभवों पर आधारित होते हैं। धीरे-धीरे बच्चे की मानसिकता पर ये ही हावी होने लगते हैं, जिससे उनके भीतर डर, पक्षपात और ऐसा रवैया पनपने लगता है, जिसमें उत्सुकता और विश्वास बिल्कुल नहीं होता। परिणामस्वरूप हो सकता है कि बच्चे के कम दोस्त बनें, वह कम सामाजिक समूहों का हिस्सा बने और कम पुस्तकें पढ़े। ऐसा बच्चा प्रेरणा, उत्साह से दूर रह सकता है और प्रोत्साहन से वंचित हो सकता है। ऐसी पाबंदियां थोपकर हम वयस्क अक्सर भूल जाते हैं कि अपने बचपन में हमने जो भी सीखा है, उसमें से अधिकतर अनुभव और आग्रह के कारण थे।

सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अपने छात्रों को जन्मजात कौशल अच्छी तरह से ढूंढने के लिए तीन आवश्यक मानसिक गुण प्रदान करते हैं:

1. विवेचनापूर्ण विचार शक्ति,
2. सुरक्षा का भाव और
3. प्रत्येक स्थिति में शांति के साथ सोचने की क्षमता।

बच्चों के शौक और रुचि जो भी हों, उनके माता पिता तथा शिक्षकों द्वारा उन्हें सही बात को सही तरीके से समझना सिखाया जाना चाहिए।

'औसत बच्चा रोजाना कई सरल और मूर्खता भरे प्रश्न पूछता है, लेकिन 10 या 12 वर्ष की आयु में जब बच्चा स्कूल का अभ्यस्त होता है, तब तक वह जान चुका होता है कि प्रश्न पूछने से अधिक महत्वपूर्ण है सही उत्तर प्राप्त करना।'

छोटे दिमाग में बड़े विचारों का विकास

जोखिम भरे क्षेत्रों में हरेक इंच पर बारूदी सुरंगें हाथों से हटाना और तलाशना बहुत कठिन, खतरनाक और मेहनत भरी प्रक्रिया होती है। सुरंगों से पटी जमीन से सभी वनस्पतियां हटानी चाहिए और मेटल डिटेक्टर से तलाशी ली जानी चाहिए। जब खतरे की आशंका वाली कोई वस्तु मिलती है तो उसे सावधानी के साथ निकाला जाना चाहिए और समाप्त किया जाना चाहिए।

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उत्तराहल्ली, बेंगलूरु के छात्रों ने अटल टिंकरिंग प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर दृष्टिहीनों के लिए पहनने वाला ऐसा यंत्र बनाया, जिसमें सेंसर होता है, जो पराश्रव्य (अल्ट्रासॉनिक) तरंगों का प्रयोग कर बाधाओं का पता लगा लेता है। यह कंपन तथा ध्वनियों के जरिये पहनने वाले को सूचित कर देता है और दुर्घटनाओं से बचने में उनकी मदद करता है।

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, हाथबंद, छत्तीसगढ़ के छात्रों को इस समस्या से निपटने के लिए निश्चित किए गए कौशल को सुधारना तथा सुरंग का पता लगाने वाले ऐसे उपकरण तैयार करना सिखाया गया, जिसमें अच्छी तकनीक का इस्तेमाल हो। कोई भी उपकरण सेंसर प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल नहीं करता, जो ध्वनि तरंगों की आवृत्ति को पकड़ती है, जिसके बाद एक अलार्म सुरंग होने का संकेत दे देता है। उपकरण को स्मार्ट फोन या ब्लूटूथ जैसे दूर स्थित उपकरण से नियंत्रित किया जा सकता है और मौजूदा तंत्रों की अपेक्षा यह बहुत तेज होती है। इसके नमूने में 9 वोल्ट की बैटरी का इस्तेमाल होता है और केवल 5 मिनट में इसे असेंबल किया जा सकता है।

दुनिया भर में दृष्टिहीन व्यक्ति अपने रास्ते में किसी भी बाधा का पता लगाने के लिए छड़ी का इस्तेमाल करते हैं ताकि दुर्घटना न हो। किंतु हर बार यह पूरी तरह सुरक्षित तरीका नहीं होता। गति पर निर्भर रहने से यह सुनिश्चित नहीं होता कि हमेशा दुर्घटना से बचाव हो जाएगा। सरल किंतु प्रभावी प्रौद्योगिकी पर आधारित समाधान की जरूरत है, जिससे दृष्टिहीन लोगों की मदद हो सके और उन्हें प्रभावी तरीके से रास्ता पता चल सके।

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उत्तराहल्ली, बेंगलूरु के छात्रों ने अटल टिंकरिंग प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर दृष्टिहीनों के लिए पहनने वाला ऐसा यंत्र बनाया, जिसमें सेंसर होता है, जो पराश्रव्य (अल्ट्रासॉनिक) तरंगों का प्रयोग कर बाधाओं का पता लगा लेता है। यह कंपन तथा ध्वनियों के जरिये पहनने वाले को सूचित कर देता है और दुर्घटनाओं से बचने में उनकी मदद करता है।

एटीएल के छात्र दृष्टिहीनों के लिए क्रांतिकारी समाधान उपलब्ध कराकर जोश में आ गए और सरल लेकिन प्रभावी समाधान के साथ उनकी मदद करना चाहते थे।

इस समय सभी दफ्तरों और मल्टीप्लेक्स इमारतों में भारी भरकम अग्निशामक यंत्र होते हैं क्योंकि भीड़ और संकरी सड़कों के कारण समय पर अग्निशमन दल की सेवा मिल ही

नहीं पाती। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सस्ते और प्रभावी तथा बड़े पैमाने पर प्रयोग के लायक समाधानों की आवश्यकता है।

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर 37बी, चंडीगढ़ के छात्रों ने अटल टिंकरिंग लैब के जरिये मिली शिक्षा द्वारा रिमोट से नियंत्रित ध्वनि तरंगों पर आधारित अग्निशामक यंत्र विकसित करने का प्रयास किया है।

छात्रों ने ऐसा रोबोट तैयार किया है, जो ध्वनि प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर आग बुझाने में मदद कर सकता है। इसके लिए रोबोट को किसी भी दूर के स्थान से नियंत्रित किया जा सकता है। आग बुझाने के लिए यह कम आवृत्ति (40 से 400 हर्ट्ज) वाली तरंगों का प्रयोग करता है। प्रौद्योगिकी पर आधारित इस नए समाधान उपकरण का वजन कम है और इसे उठाकर ले जाना आसान है।

गलियों में पानी भरना गंभीर समस्या हो गई है। द बेस्ट हाई स्कूल, अहमदाबाद के छात्रों को भारी बारिश के दिनों में कई बार छुट्टी करनी पड़ती थी। उनके स्कूल की ओर जाने वाली सड़कें सामान्य स्तर से कम ऊंचाई पर हैं, इसलिए बारिश के दौरान पानी सड़कों पर भर जाता है। कभी-कभी तो लोगों के लिए आना-जाना असंभव हो जाता है और यातायात धीमा होने से मुश्किल बढ़ जाती थी।

छात्रों ने अटल टिंकरिंग लैब के अपने अनुभव के जरिये ऐसे नमूने पर काम किया है, जो किसी भी इलाके में बारिश के दौरान जमा हुए पानी की मात्रा नाप लेता है और उसकी सूचना नगर पालिका तथा क्षेत्र के पर्यवेक्षक के पास भेज देता है ताकि समय पर सही कदम उठा लिए जाएं और बहुत देर न होने पाए।

ऐसी ही समस्या सुलझाने के लिए केंद्रीय विद्यालय रेलवे, मालीगांव, असम के छात्रों ने अलग तरीका अपनाया और ऐसी स्मार्ट प्रणाली पर काम किया है, जो मोबाइल फोन कनेक्टिविटी और एसएमएस अलर्ट सिस्टम के जरिये सड़कों पर जलस्तर का पता लगाती है और शहर के विभिन्न हिस्सों में डिसप्ले के जरिये यात्रियों को सतर्क करती है ताकि ट्रैफिक जाम न हो जाए। उन्होंने ऐसे उपकरण पर भी काम किया है, जो वन क्षेत्रों के करीब कॉलोनियों में घुस आने वाले तेंदुओं का पता लगा लेता है। वन अधिकारियों की मदद

द बेस्ट हाई स्कूल, अहमदाबाद के छात्रों छात्रों ने अटल टिंकरिंग लैब के अपने अनुभव के जरिये ऐसे नमूने पर काम किया है, जो किसी भी इलाके में बारिश के दौरान जमा हुए पानी की मात्रा नाप लेता है और उसकी सूचना नगर पालिका तथा क्षेत्र के पर्यवेक्षक के पास भेज देता है ताकि सही कदम उठा लिए जाएं और बहुत देर न होने पाए।

से सतर्क करने की ऐसी प्रणाली लगाई जा सकती है, जो उस स्थान का पता बता देती है, जहां से तेंदुए अंदर घुसे हैं और जब भी तेंदुआ जंगल से निकल कर शहर में घुसता है तो प्रशासन को सतर्क भी कर देती है। तेंदुआ नागरिकों को नुकसान पहुंचाए, उससे पहले ही अधिकारियों को उपाय करने के लिए सतर्क कर दिया जाता है।

समाधान छोटे हो सकते हैं, लेकिन सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में प्रौद्योगिकी वाला दृष्टिकोण अपनाने के कारण उत्साहजनक हैं। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने अपना जीवन प्रौद्योगिकी के जरिये समाज का कायाकल्प करने में बिता दिया और हमेशा देश के छात्रों तथा युवाओं को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने में भी यकीन किया। प्रत्येक भारतीय उनके जीवन से बहुत कुछ सीख सकता है। जीवित रहते हुए डॉ. कलाम ने सदैव शिक्षक के रूप में याद किए जाने की इच्छा जताई। वे जानते थे कि 21वीं शताब्दी में भारत के छात्र और युवा हमारे देश की बुनियाद को मजबूत कर सकते हैं। छात्रों तथा युवाओं में विवेचनात्मक विचार को बढ़ावा देने का सबसे अच्छा तरीका उन्हें 'एकदम नया' सोचने लायक बनाना, अपने आसपास की चुनौतियों को समझने तथा रोजाना सामने आने वाली समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्हें 'उनकी नाकामियों और तथ्यों के जरिये सीखने दीजिए, अनूठा बनने का मौका उन्हें दीजिए।' उन्होंने जो देखा है, उस पर आधारित अपने विचारों को व्यक्त करने में उन्हें हिचक नहीं होनी चाहिए।

डॉ. कलाम अपने छात्रों और युवाओं को बताया करते थे कि जीवन में बड़े लक्ष्य रखने चाहिए क्योंकि छोटा लक्ष्य रखना अपराध है! इसलिए ऊंचा लक्ष्य निर्धारित करने लायक विचार प्रक्रिया के निर्माण में छात्रों की मदद की जाए और उन्हें अपने विचारों को अपनी समस्याओं के समाधान लायक बनाने दिया जाए, जो बाद में नवाचार को जन्म देंगे। इससे उन्हें नई वस्तुओं की खोज करने तथा अपनी खोज साझा करने की क्षमता विकसित करने की प्रेरणा मिलेगी। इस प्रकार वे अपनी कृति का आनंद उठाएंगे और अपनी खोज को उत्कृष्ट बनाने का नया बल भी उन्हें मिलेगा। उन्हें जमीनी स्तर की समस्याएं सुलझाने में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी तथा गणित (स्टेम) का महत्व पता चलने दीजिए। इससे उनके भीतर किसी भी समस्या का सर्वोत्तम समाधान प्राप्त करने की विश्लेषण क्षमता विकसित होगी।

सफल होने के लिए किसी को भी लगातार सीखना होता है और ज्ञान प्राप्त करने के लिए कठिन श्रम करना होता है। डॉ. कलाम अपने छात्रों से 'नायक' बनने के लिए कहा करते थे। शिक्षकों और माता-पिता के लिए भी यह समझना महत्वपूर्ण है कि आगे बढ़ने और अपने लक्ष्य

प्राप्त करने के लिए उन्हें स्वयं को जीवन भर छात्र ही मानना होगा। यदि वे अभी तक प्राप्त ज्ञान से ही संतुष्ट हो जाते हैं तो नुकसान उन्हें ही होगा।

हर किसी को बच्चे की तरह अपनी रचना और खोज को साथियों, सहपाठियों या शिक्षकों के साथ साझा करने में आनंद मिलता है, जो उनके लिए प्रोत्साहन का सबसे बड़ा जरिया है। सामाजिक प्राणी होने के कारण हम सकारात्मक प्रोत्साहन एवं मान्यता के भूखे होते हैं - जो किसी बच्चे के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। जब शिक्षक और माता-पिता उनके काम को सकारात्मक टिप्पणी के साथ सराहते हैं और साथ देते हैं तो उनके भीतर स्टेम के प्रति सम्मान एवं प्रेम जन्म लेने लगता है। यह उत्साहवर्द्धन कक्षा में टिप्पणियों और प्रशंसा के रूप में हो सकता है।

इस प्रकार की मान्यता से ऊर्जा, उत्साह तथा सम्मान में वृद्धि होती है, जिससे छात्र नई चुनौतियों के लिए तैयार हो जाता है। वयस्कों के लिए उनके पेशेवर करियर में भी यही बात लागू होती है। स्टीव जॉब्स, बिल गेट्स, माइकल डेल और ढेरों दूसरे उद्यमी एक दिन में तैयार नहीं हो गए थे। छात्रों को अपने अनुभव से यह सीखना पड़ेगा कि किसी भी क्षेत्र के विशेषज्ञ किसी समय नौसिखिये भर थे। हर किसी का सम्मान पाने लायक व्यक्तित्व तैयार करने में उन्हें वर्षों का समय लग गया। उन्होंने गलतियों में कुछ गंवाया नहीं है बल्कि उनसे भी सीखा है।

अटल टिंकरिंग लैब का उद्देश्य युवाओं के मन में उत्सुकता, रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना है। अटल टिंकरिंग लैब हमारे देश की उभरती प्रतिभा को ऐसा मंच प्रदान करेंगी, जहां वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से तथा यकीन के साथ व्यक्त कर सकेंगे और गंभीर प्रश्नों को हल करने के लिए विचार गढ़ सकेंगे।

अटल टिंकरिंग लैब का उद्देश्य युवाओं के मन में उत्सुकता, रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना है। अटल टिंकरिंग लैब हमारे देश की उभरती प्रतिभा को ऐसा मंच प्रदान करेंगी, जहां वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से तथा यकीन के साथ व्यक्त कर सकेंगे और गंभीर प्रश्नों को हल करने के लिए विचार गढ़ सकेंगे। लैब युवा छात्रों को रचनात्मक मंच प्रदान करेंगी, जिसमें स्टेम शिक्षा, संचार, रोबोटिक्स और अन्य प्रायोगिक व्यवस्थाओं में काम करने की किट होंगी, जिनकी मदद से वे सीख और खेल सकेंगे।

अटल टिंकरिंग लैब छात्रों को रोजमर्रा की समस्याओं के तकनीकी समाधान मुहैया कराने के लिए मंच का काम करेंगी और अनुसंधान तथा नवाचार के लिए युवाओं का आह्वान करेगी। उन्हें ठोस अवसर तथा इनक्यूबेटर की सुविधा प्रदान करेंगे, जिससे वे उद्यमिता के योग्य बन सकें। लैब की योजना प्रयोग के जरिये सीखने के विचार का प्रयोग करने की है ताकि ये साधन और वैज्ञानिक उपकरण प्रदान कर रचना एवं नवाचार का जुनून उत्पन्न हो सके। इस समय 33 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के 941 स्कूलों और भारत के 55 प्रतिशत जिलों में अटल टिंकरिंग लैब काम कर रही है और इस वर्ष 1300 और भी अटल टिंकरिंग लैब खोलकर भारत के सभी जिलों - सभी स्मार्ट सिटी तक फैलाने का सपना है। उनकी योजना समूची भावी युवा पीढ़ी तक अटल टिंकरिंग लैब को पहुंचाने की है, चाहे वे युवा शहरों में हों, कस्बों में हों या गांवों में हों।

कार्यक्रम का प्रभाव बढ़ाने के लिए छात्रों और शिक्षकों दोनों को ही संरक्षण कार्यक्रमों का हिस्सा बनाया जाएगा। यह रचनात्मकता तथा नवाचार को सच्चे अर्थों में मजबूत करने के 'क्रिएटिव इंडिया-इनोवेटिव इंडिया' के सपने को पूरा करने वाली लंबी यात्रा की शुरुआत भर है और इस प्रकार उद्यमिता को बढ़ावा देती है तथा सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास को बल प्रदान करती है।

भावी भारत के छात्र देश को प्रत्येक भारतीय के लिए महानता एवं गौरव वाला बनाएंगे, देश भर में विकास करेंगे, आमूल-चूल संरचनात्मक सुधार लाएंगे ताकि नवाचारों के जरिये कायाकल्प को प्रोत्साहित करते हुए अभूतपूर्व पहलों के माध्यम से सतत विकास प्राप्त किया जा सके। ❑

संदर्भ

- नीति आयोग द्वारा आयोजित चैंपियंस ऑफ चेंज कार्यक्रम में प्रधानमंत्री का उद्बोधन।

स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि

राष्ट्रव्यापी स्वच्छता ही सेवा अभियान के बाद 16 अगस्त से 8 सितंबर तक देश भर में स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि नामक एक और अभियान चलाया गया जिसमें निबंध, लघु फिल्म और चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें स्कूली बच्चों पर विशेष ध्यान दिया गया।

लघु फिल्म प्रतियोगिता: इसमें लोगों को स्वच्छता विषय पर 2-3 मिनट की फिल्में बनाने तथा यह दिखाने का अनुरोध किया गया कि वे स्वच्छ भारत अभियान में किस तरह योगदान कर सकते हैं। फिल्म का विषय था 'भारत को स्वच्छ बनाने में मेरा योगदान'। लघु फिल्म सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में बनाई जा सकती है।

दो आयु वर्ग में पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे 0-18 वर्ष और 18 वर्ष से अधिक। प्रत्येक वर्ग के तीन विजेताओं को राष्ट्रीय स्तर तथा राज्य और जिला स्तर पर पुरस्कृत किया जाएगा।

निबंध प्रतियोगिता: इसमें लोगों को स्वच्छता विषय पर निबंध लिखने तथा यह बताने के लिए आमंत्रित किया कि वे स्वच्छ भारत मिशन में व्यक्तिगत रूप से किस तरह योगदान दे सकते हैं। निबंध का विषय 'स्वच्छ भारत के लिए मैं क्या कर सकता हूं/सकती हूं?' निबंध किसी भी प्रमुख भारतीय भाषा में लिखा जा सकता था।

तीन विजेताओं को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत किया जाएगा। राज्य और जिला स्तर पर भी पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक) और विकलांग व्यक्तियों को आवेदन करने के लिए प्रेरित किया गया तथा राष्ट्रीय पुरस्कारों में उन्हें विशेष सम्मान दिया जाएगा।

चित्रकला प्रतियोगिता: स्वच्छता को जन आंदोलन बनाने की दिशा में एक और कदम उठाते हुए चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था। चित्रकला प्रतियोगिता का विषय था 'मेरे सपनों का स्वच्छ भारत'। यह प्रतियोगिता केवल कक्षा 1 से कक्षा 5 तक के बच्चों के लिए थी। ❑